18

बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता (भाग-1)

हम सभी अपनी भाषा को अच्छी तरह से उपयोग करने की क्षमता रखते हैं। हम अपनी भाषा की ध्वनियों को पहचानते हैं, यह भी जानते हैं कि किन ध्वनियों को मिलाकर शब्द बन सकते हैं व कौन-सी ऐसी ध्वनियाँ हैं जो साथ नहीं आ सकतीं। उदाहरण के लिए, हमें पता है कि 'फ्क्ल्म' जैसा कोई शब्द नहीं बन सकता लेकिन 'झल' जैसा हो सकता है (यद्यपि हिन्दी में ऐसा शब्द नहीं है)। बच्चों को भी यह बात जल्द ही पता चल जाती है। हिन्दी भाषा सीख रहे छोटे बच्चे भी इस तरह की गलती नहीं करते, यानी वे उटपटांग शब्द बनाएँगे, ऐसे शब्द बोलेंगे जो हम नहीं समझ पाते, लेकिन वे शब्द 'फ्क्ल्म' जैसे नहीं होंगे बल्कि ऐसे होंगे जो बोले जा सकते हैं - यानी व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर के क्रम के अनुसार जैसे - भू, पैदू, गडम-गडम इत्यादि। यद्यपि हम हिन्दी भाषा जानते हैं, उसका धाराप्रवाह उपयोग भी करते हैं लेकिन कोई भी हिन्दी भाषी नहीं बता सकता कि भाषा के ये विभिन्न नियम क्या होते हैं। हाँ, अगर किसी ने थोड़ा बहुत भाषा विज्ञान पढ़ा है तो वह शायद भाषा के इस जटिल संसार के बारे में समझ पाए व बता भी पाए अन्यथा मुश्किल होगा।

यह लेख भाषा विज्ञान के नज़रिए से बच्चों की भाषा सीखने की क्षमताओं का एक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस विश्लेषण हेतु लेख मुख्यतः हिन्दी भाषा से उदाहरण लेता है और हिन्दी में कौन-कौन सी ध्वनियाँ हैं, इन ध्वनियों की क्या विशेषताएँ हैं, कौन-सी ध्वनियाँ एक साथ आ सकती हैं कौन-सी नहीं, शब्द स्तर पर क्या नियम हैं, आदि विषयों के बारे में विस्तार से चर्चा करता है।

जब हम स्कूल में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने का (अक्सर असफल) प्रयास करते हैं तो कई बार यह भूल जाते हैं कि हर बच्चे में भाषा सीखने की असीम क्षमता होती है और

वह अपनी भाषा व उसका व्याकरण पूर्णतया आत्मसात करने के बाद ही स्कूल आता है। यानी चार वर्ष की आयु का बच्चा भाषागत दृष्टि से एक वयस्क ही होता है। ध्वनि-संरचना का जटिल संसार बच्चा स्वयं बिना किसी की मदद के सुलझा लेता है। बात सिर्फ इतनी नहीं कि हर बच्चा जानता है कि उसकी भाषा की ध्वनियाँ कैसे बोली जाएँगी, अपितु यह भी कि ये ध्वनियाँ किस क्रम में आ सकती हैं और किस क्रम में नहीं। ये सब नियम बच्चे के दिमाग में सुव्यवस्थित ढंग से उपलब्ध रहते हैं। बच्चा सार्थक शब्द ही बोलता है, यदा-कदा नए-नए शब्द बनाता भी है तो वे ध्वनि संरचना के नियमों का उल्लंघन नहीं करते। ज़रा सोचिए कि 'प, फ, ब, भ और म' में क्या अन्तर है? सब ओष्ठय ध्वनियाँ हैं। चलिए ओंठ तो दिखाई देते हैं। कुछ अनुकरण सम्भव है। 'क, ख, ग, घ और ङ' के उच्चारण व अन्तर को बच्चा कैसे पकड़ता है? और बच्चे को यह नियम कौन बताता है कि हिन्दी के अधिकतर शब्द 'कल, नल, काला, बाल, कील, दरवाज़ा, किताब, पेड़, फूल' इस तरह के ही होंगे यानी उनकी संरचना 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' होगी? 'परिणाम' शब्द की ध्वनि संरचना देखिए-

प्+अ+र्+इ+ण्+आ+म

बच्चा यह नियम कैसे पकड़ लेता है कि हिन्दी शब्दों के अन्त में 'अ' (जो लिखित हिन्दी में सदैव दिखाई देता है) नहीं बोला जाएगा। 'कल' को 'क्+अ+ल्' बोलते हैं न कि 'क्+अ+ल्+अ' जैसा कि लिखा गया है।

कुछ देर के लिए लिखने को भूलकर ध्वनि-संरचना के बारे में सोचिए। हिन्दी-भाषी चार वर्ष की आयु के बच्चे के दिमाग में हिन्दी ध्वनि-संरचना का क्या चित्र होगा यह समझना तो असम्भव है। लेकिन उसकी एक छोटी-सी झलक देखने का प्रयास हम कर सकते हैं, बच्चे की भाषा के आधार पर। बच्चा 'पापा, बाबा, मामा, चाचा, काका; काना, खाना; जाना, पाना; पानी, नानी; बाल, जाल; कील, नील' आदि शब्दों में स्पष्ट अन्तर करता है। यह अन्तर कर पाना तभी सम्भव है जब बच्चे में 'प्, ब्, म्, क्, च्, ख्, ज्, न्, ल्' आदि को एक-दूसरे से अलग करने की क्षमता हो। आखिर 'कील' और 'नील' में क्या अन्तर है। केवल 'क्' और 'न्' का। 'क्' कण्ठ से बोली जाने वाली ध्वनि है - अल्पप्राण है व अघोष है। 'न्' दन्त्य है, नासिक व सघोष। यह सब न तो माँ-बाप जानते हैं, न रिश्तेदार।

बच्चा नियम पकड़ता है

बच्चा यह सब कैसे पकड़ लेता है? और यह एक-दो ध्वनियों की बात नहीं। पूरी ध्वनि-व्यवस्था इन सूत्रों में बँधी है। व्यंजन व्यवस्था देखिए -

	अघोष		सघोष		सघोष-नासिक
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ड़
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म

इन 25 व्यंजनों के अलावा य, र, ल, व, स, ह; श, ष, ळ, ड़ और ढ़ के साथ वर्णमाला में अक्सर संयुक्त व्यंजन 'क्ष, त्र, ज्ञ और श्र' भी दिए जाते हैं। कुछ अन्य ध्वनियों यथा क़, ख़, ग़, फ़, ज़ आदि के बारे में भी चर्चा करेंगे।

बच्चा यह कैसे समझ लेता है कि 'प्' अल्पप्राण, अघोष, ओष्ठ्य ध्वनि है और 'घ्' महाप्राण, सघोष, कण्ठ्य ध्वनि है।

जैसा विवरण ऊपर दिया गया है वैसा तो बच्चा नहीं दे सकता। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह अन्तर उसके दिमाग में है। वह 'पर' और 'घर' में अन्तर करता है। दोनों में 'अर' तो समान है। अन्तर केवल 'प्' और 'घ्' का ही है। अल्पप्राण/महाप्राण में यह समझना होता है कि ध्वनि के साथ अतिरिक्त वायु का उपयोग होगा या नहीं - 'ख' में है लेकिन 'क' में नहीं। सघोष/अघोष में यह समझना होता है कि गले के अन्दर छुपी श्वास नली के ऊपर बैठी स्वर-तंत्री में कम्पन है या नहीं। 'क' और 'ख' में कम्पन नहीं है, वे अघोष हैं, 'ग' और 'घ' में कम्पन है, वे सघोष हैं।

स्वर-ध्वनियों का संसार देखिए

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ

ओ औ अं अः आँ ऑ

('ऋ' के बारे में अलग से चर्चा करेंगे। लिखने में मात्राओं का प्रश्न भी सामने आएगा।)

'अ' और 'आ' में अन्तर शायद बहुत सरल लगे पर ज़रा महसूस करके देखिए कि 'इ' और 'ए' में क्या अन्तर है। सुनने में तो साफ है जैसे 'कि' और 'के'। पर बोलने में यह अन्तर कैसे लाया जाता है। बच्चा यह कैसे पकड़ लेता है कि 'उ' में जीभ को पीछे खींचना है व ओंठों को गोल करना है? यह भी समझता है कि व्यंजनों में तो वायु-प्रवाह को कहीं न कहीं

अवश्य रोकना है; परन्तु स्वरों में वायु निरन्तर बहती रहनी चाहिए। क्या यह सब अनुकरण से सीखना सम्भव है?

ध्वनि संरचना के दो नियमों की, जो तीन-चार साल का बच्चा निश्चित रूप से जानता है, हमने ऊपर चर्चा की। एक तो यह कि बच्चा पकड़ लेता है कि अधिकतर शब्दों की संरचना 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' होगी। दूसरा यह कि ध्वन्यात्मक मूल्य स्थान के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। 'लड़का' में 'ल' पूरा है लेकिन 'कमल' व 'कलकल' के तीनों 'ल्' आधे हैं। हिन्दी का नियम है कि 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' की कड़ी में अन्तिम स्वर बोला नहीं जाएगा।

कुछ और नियम देखिए। अनुस्वार-अनुनासिक (चन्द्रबिन्दु) तथा नासिक्य व्यंजनों को कैसे लिपिबद्ध किया जाएगा तथा वर्णमाला व वर्तनी में उसका प्रयोग कैसे होगा; ये तो स्कूली बातें हैं, लिखाई-पढ़ाई से जुड़ी। परन्तु इनके उपयोग के ध्वन्यात्मक नियम तो बच्चा सीखकर ही स्कूल आता है। स्वयं अपनी काबिलियत से सीखकर। बच्चा जानता है - 'जिस वर्ग की ध्वनि उससे पहले उसी वर्ग का समस्थानीय पंचम नासिक व्यंजन' का उच्चारण करना है। यानी 'पंप' में 'म्' होगा; 'आनंद' में 'न्'; 'चंचल' में 'ञ्'; 'पंडित' में 'ण्'। 'सम्बन्ध' शब्द को बोलकर देखिए - पहला अनुस्वार 'म्' (प वर्ग के 'ब्' से पहले) और दूसरा 'न्' (त वर्ग के 'ध्' से पहले) - क्या कोई बच्चा कभी 'सन्बम्ध' बोलता है?

बच्चा नित ऊल-जलूल नए शब्द बनाया करे पर इस नियम का उल्लंघन न होगा। 'इंक-विंक' में समस्थानीय नासिक व्यंजन 'ङ' ही आएगा। अनुनासिकता बिलकुल अलग बात है और इसका सम्बन्ध स्वरों से है व्यंजनों से नहीं। कुछ विशेष शब्दों में बच्चे को यह सीखना है कि स्वर की ध्वनि मुख के साथ-साथ नाक से भी निकलेगी जैसे, आँख, आँधी, मैं, हूँ, ऊँट, फूँकना आदि। कुछ शब्दों में तो बच्चे को अनुनासिक स्वरों व नासिक्य व्यंजनों में सूक्ष्म ध्वन्यात्मक अन्तर करना होता है जैसे - हँस (स्वर अनुनासिकता) व हंस (नासिक व्यंजन, पक्षी)।

व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर

ध्वनि-व्यवस्था के कुछ अन्य नियम देखिए। हर भाषा में संयुक्त ध्वनियों के अपने नियम होते हैं। भाषा इस्तेमाल करने वाला हर व्यक्ति इन्हें जानता है पर किसी को बता नहीं सकता। भाषा-वैज्ञानिक भी अनेक तरह के शोध के बाद उनकी झलक भर ही देख पाते हैं। क्योंकि प्रधान नियम है 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' इसलिए संयुक्त-ध्वनियाँ कम ही देखने में आती हैं और जब आती हैं तो उन पर अनेक तरह के अंकुश लगे रहते हैं। अँग्रेज़ी में शब्द के शुरू में तीन से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ आ ही नहीं सकतीं। और ये तीन भी केवल ऐसे शब्दों में मिलती हैं- Strike, Street, Scream, Split, Squash आदि। यानी अँग्रेज़ी का यह नियम है कि यदि शब्द के शुरू में तीन व्यंजन ध्वनियाँ होंगी तो

- पहली व्यंजन ध्वनि केवल 'स्'
- दूसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'प्', 'त्' या 'क्'
- तीसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'य्', 'र्', 'ल्' या 'व्'

हिन्दी में भी ‘स्त्री’ में ‘स्’, ‘त्’ व ‘र्’ ही हैं। ‘प्रकार’, ‘न्यूनता’, ‘स्नान’, ‘स्नेह’, ‘क्रम’, ‘ट्रक’, ‘प्यास’, ‘व्याख्या’ आदि के आरम्भ में केवल दो ही व्यंजन ध्वनियाँ हैं। क्या हिन्दी में ऐसा सम्भव है कि शब्द के आरम्भ में तीन व्यंजन ध्वनियाँ आएँ और उनका क्रम होः

सघोष महाप्राण

+

अघोष महाप्राण

+

अघोष अल्पप्राण

(यथा ‘घ्’)+(यथा ‘ख्’)+(यथा ‘क्’)

आखिर बच्चे कैसे समझ लेते हैं कि ‘हरव्कीच’ जैसा शब्द हिन्दी में नहीं हो सकता? बात केवल इतनी नहीं कि बच्चे हिन्दी के 41 व्यंजनों को अलग कर लेते हैं; वे इस नियम को भी सहज ही आत्मसात कर लेते हैं कि कौन-कौन सी व्यंजन ध्वनियाँ एक-दूसरे के साथ जुड़ सकती हैं। सम्भव है कि हिन्दी का यह नियम है कि ‘सघोष महाप्राण + अघोष महाप्राण + अघोष अल्पप्राण’ वाला क्रम हिन्दी में नहीं हो सकता। (जो अन्य किसी भाषा में हो सकता है)। यानी ‘ध्थ्ठे’, ‘भ्थ्टा’, ‘ध्ख्ती’, ‘भ्चू’ आदि हिन्दी में सम्भव नहीं। हिन्दी का शब्दकोश देखें ‘शब्दों के शुरू में अधिकांश ‘क्’ के साथ ‘र’ मिलेगा या ‘श्’ यानी ‘क्रम’, ‘क्षमा’ आदि। दो ही व्यंजन; उसके बाद स्वर।

‘व्यंजन-स्वर’, ‘स्वर-व्यंजन’ का क्रम बना रहे, यानी दो स्वर या दो व्यंजन साथ-साथ न आएँ इस व्यवस्था के लिए अलग-अलग भाषाएँ अलग-अलग प्रावधान करती हैं। बांग्ला में ‘सीता का’ कहने के लिए केवल ‘र्’ जोड़ते हैं, ‘सीतार’। लेकिन ‘राम का’ कहने के लिए केवल ‘र’ जोड़ने से काम नहीं चलेगा क्योंकि ‘राम’ में दो व्यंजन साथ-साथ आ जाएँगे। इसलिए ‘एर’ का प्रयोग किया जाता है, यानी ‘र’ से पहले ‘ए’ स्वर जोड़कर बनता है ‘रामेर’।

अँग्रेज़ी में भी यही नियम भाषा की पूरी ध्वनि-संरचना पर फैला हुआ है। a boy कहते हैं लेकिन an egg में दो स्वरों के बीच ‘न्’ आ गया। इंग्लैंड की अँग्रेज़ी में car-park में दोनों ‘र्’ का उच्चारण नहीं होता। उच्चारण किया जाता है – का पा-क। लेकिन car-engine में ‘र्’ का उच्चारण होगा – कार इंजिन। ‘स्टेशन’ को पंजाब में ‘सटेशन’, उत्तर प्रदेश में ‘इस्टेशन’ व हरियाणा में ‘टेशन’ उच्चारित किया जाता है। दो व्यंजन साथ-साथ भाते नहीं हमें। बोलने को तो बोल ही सकते हैं। अँग्रेज़ी में तो दो स्वर साथ होने पर ‘र्’ अक्सर आसमान से टपक पड़ता है जैसे मूल अग्रेज़ी भाषी द्वारा India and Pakistan का उच्चारण करने पर India के बाद ‘र्’ आएगा और वैसे ही idea of में idea के बाद।

बच्चा यह कैसे सीखता है?

ध्वनि-संरचना के संसार की यह एक छोटी-सी झलक है। बच्चा यह सब स्वयं कैसे सीख लेता है, चार वर्ष की छोटी-सी आयु में? अनुकरण से तो नहीं सीख सकता। अनुकरण उस बात का हो जो कोई दिखा सके या बता सके। ये नियम तो भाषा वैज्ञानिक भी ठीक से नहीं समझते। इस तरह का भाषागत् ज्ञान होने के लिए खासकर दो चीज़ें होनी आवश्यक लगती हैं। भाषा सीखने की सहजात क्षमता (Innate Ability) और ऐसा वातावरण जिसमें भाषा तो खूब हो लेकिन स्पष्ट तौर पर नियम व व्याकरण न हों। वातावरण ऐसा कि बच्चे को कुछ बोझ महसूस न हो, बोरियत न लगे, मजबूरी न हो। बच्चे का ध्यान मौके की बात पर हो, न कि व्याकरण के नियमों व भाषा की शुद्धता पर। बच्चे के लिए हम किसी विशेष भाषागत वातावरण की रचना नहीं करते। स्वाभाविक, सहज सन्दर्भों में भाषा का प्रयोग करते हैं - उससे बातचीत करते हैं, उसकी बातचीत (कितनी भी गलत क्यों न हो) प्यार से सुनते हैं व उसको अन्य लोगों की बातचीत (चाहे उसे समझ आए न आए) सुनने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं। सामाजिक बातचीत के अथाह समुद्र से बच्चा स्वयं एक सुव्यवस्थित व्याकरण व शब्द ढूँढ लाता है। ये कहाँ तक जायज़ है कि ऐसे बच्चे को हम स्कूल आने पर वर्णमाला, मात्रा व वर्तनी सिखाना शुरू कर दें?

शुरुआत वर्णमाला से ही क्यों?

आप खुद ही सोचिए ऐसी क्षमताओं वाले बच्चे को जब आप 'न' से 'नल' व 'च' से 'चल' पढ़ाते-लिखाते हैं तो उसे कितनी बोरियत होती होगी। जो बच्चा रोज़मर्रा की बातचीत से स्वयं सब ध्वनियाँ एवं ध्वनि संरचना के जटिल नियम सहज ही ढूँढ लाता है, क्या वह लिखने-पढ़ने की भाषा से वर्णमाला व वर्तनी के नियम न ढूँढ लाएगा? पता नहीं कब बच्चे की काबिलियत पर हम यकीन करना सीखेंगे?

बच्चे को कविता, कहानी, चित्रकथा, गीत सुनाइए-पढ़ाइए, उसके आसपास उसकी मनचाही सामग्री रखिए। हिज्जे सीखना कोई कठिन कार्य नहीं है बच्चे के लिए। अलग-अलग सन्दर्भों में अलग-अलग शब्द-चित्रों में जब वही वर्ण बच्चों के सामने आएँगे तो वह उन्हें स्वयं ही पहचान लेगा। सीखने की प्रक्रिया यह नहीं है कि टुकड़े-टुकड़े जोड़ो और एक पूर्ण इकाई बन जाएगी। ठीक इससे उलटी है। एक पूर्ण छवि पहले बनती है, उसमें रंग बाद में भरे जाते हैं, अलग-अलग तरह से। आप ही बताइए ताजमहल बनने से पहले बना या बनने के बाद? सीखने की मुख्यतः वही दो शर्तें हैं - बच्चे की काबिलियत पर विश्वास व बच्चे के लिए मज़ेदार वातावरण का निर्माण।

स्रोत

- रमाकान्त अग्निहोत्री, शैक्षिक संदर्भ, जुलाई–अगस्त-1999, पृ 7-13।